• बाल कविता...

## आज न आए...

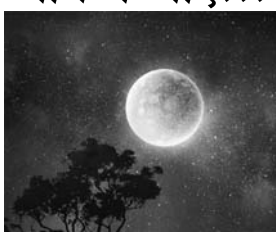

आज न आए चंदा मामा
आज कहां पर खोए वे
क्या वे आना भूल गए हैं
या घर में ही सोए वे
तारे बैठे बाट जोहते
आसमान भी फीका है
सब कहते हैं, सुंदर चंदा
आसमान का टीका है
डांट पड़ी क्या उनको घर में
फूट-फूटकर रोए वे
वे आते, चांदनी चमकती
धरती अच्छी लगती तब
यह जो फैली है अंधियारी
दूर कहीं पर भाती तब
इतने उजले हैं, साबुन से
खूब गए हैं धोए वे
हम बच्चों के तो मामा हैं
अम्मी के हैं भाई वे
इसीलिए अक्सर आ-आकर
देते यहां दिखाई वे
मगर आज नभ के सागर में
क्या हैं गए डुबोए वे
आज न आए चंदा मामा
आज कहां पर खोए वे।

■ श्रीप्रसाद

• चुटकुले...

पत्नी – मैं रोज पूजा करती हूं– काश एक दिन श्रीकृष्ण के दर्शन हो जाये..
पति – एक बार मीराबाई बन कर जहर पी ले–
फिर देख श्रीकृष्ण तो क्या तूझे सारे भगवान नजर आ जाएंगे....

अरे !!!!
सरकार ने गुटखा के दाम बढ़ा दिए हैं।
अब का कीजिएगा?
अरे बाबू करना का है...
आधा घंटा देर से थूकेंगे।
और का ? ? ?

बाप– बेटी तुम पहले मुझे पापा कहती थी...और अब डैड कहती हो ऐसा क्यों...
बेटी– ओह डैड, आप भी न...पापा कहने से लिपस्टिक खराब हो जाती है...
बाप बेहोश...

• जानकारी...

## दुनिया के दयनीय देश...

दुनिया के सबसे दयनीय देशों की एक लिस्ट जारी हुई है। इसमें 157 देशों का आंकलन किया गया है, इसमें भारत को भी शामिल किया गया है। प्रसिद्ध इकोनॉमिस्ट स्टीव हैंके ने ये एनुअली मिजरी इडेंक्स जारी किया है। उन्होंने महंगाई, बेराजगारी, जीडीपी परिवर्तन, बैंक उधार दरों जैसे आर्थिक फैक्टरों के आधार ये सालाना लिस्ट तैयार की है।

इस लिस्ट में जिम्बाब्वे टॉप पर है। अफ्रीकी देश जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति एमर्सन मनांगाग्वा की लागू की गई नीतियों को इसके लिए जिम्मेदार बताया है। इस इंडेक्स के मुताबिक जिम्बाब्वे ने साल 2022 में 243.8 फीसदी महंगाई दर को छुआ था। उन्होंने अपने आकलन में स्विट्जरलैंड को सबसे खुशहाल देश बताया है।

भारत को हैंके एनुअली मिजरी इडेंक्स में 103वें स्थान पर रखा गया है। बेरोजगारी से भारत के लोग परेशान हैं। इस वजह से दयनीय देशों की लिस्ट में उसका नंबर 100वें स्थान से ज्यादा है। भारत का पड़ोसी देश पाकिस्तान एनुअली मिजरी इडेंक्स में 35वें स्थान पर है। पाकिस्तान में बेहताशा मंहगाई दर बढ़ रही है और इसे उसकी दयनीय हालत के लिए प्राइमरी फैक्टर बताया गया है। गौरतलब है कि पाकिस्तान आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों से गुजर रहा है। इस लिस्ट में सबसे दयनीय देशों में अफ्रीका के कई देश हैं।

स्टीव हैंके के एनुअली मिजरी इडेंक्स के मुताबिक जिम्बाब्वे, वेनेजुएला, सीरिया, लेबनान, सूडान, अर्जेंटीना, यमन, यूक्रेन, क्यूबा, तुर्की, श्रीलंका, हैती, अंगोला, टोंगा और घाना को दुनिया के 15 दयनीय देशों में जगह मिली है। हैंके ने अपने विश्लेषण के आधार पर ट्विटर पर टॉप 15 दयनीय देशों की लिस्ट जारी की है। उन्होंने ट्वीट कर कहा- असाधारण महंगाई, उच्च बेरोजगारी, उधार दरो और कमजोर जीडीपी की वजह से एनुअली मिजरी इडेंक्स में जिम्बाब्वे दुनिया का सबसे दयनीय देश है, क्या मुझे कुछ और कहने की जरूरत है। एनुअली मिजरी इडेंक्स रैंकिंग में क्यूबा नौवें नंबर पर है। इस पर उन्होंने कहा कि विनाशकारी आर्थिक नीतियों ने इस देश को बदहाल कर दिया है। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के फिनलैंड लगातार छह साल से दुनिया का सबसे ज्यादा खुशहाल देश बताया गया है. उसे स्टीव हैंके के एनुअली मिजरी इडेंक्स में 109वां स्थान हासिल किया। अमेरिका इस लिस्ट में 134वें नंबर हैं।

## टूटा पंख

**गतांक से आगे...**

इल-चुंग ने अपने बड़े भाई टोंगटोंगी से कहा, ''भइया! ये कोई मामूली कुम्हड़े नहीं है। उठकर देखो तो सही...'' और यह कहने के साथ ही उसने एक कुम्हड़े को काटा और खनखनाती हुई सोने की मुहरें लुढ़कने लगीं।

टोंग-टोंगी और साल-सारी ने सोने की मुहरें देखीं, तो इकट्ठा करने के लिए एकदम ऐसी फुरती दिखाई जैसी जीवन भर देखने में नहीं आयी थी। देखते ही देखते उन्होंने दूसरा कुम्हड़ा भी काट डाला। सोने की मुहरों का ढेर लग गया। इतनी मुहरें देखकर वे खुशी से नाच उठे और उछल-उछलकर कहने लगे, ''अब काम करने की क्या जरूरत है। मजे से बैठकर खाएँगे, नाचेंगे कूदेंगे...।''

तब इल-चुंग ने उन्हें जंगल में पड़ी एक घायल चिड़िया की सारी बात बताई। सारी बात सुनकर दोनों भाई ईर्ष्या से जल उठे। टोंग-टोंगी सिर खुजलाते हुए कुछ सोच रहा था। इल-चुंग चुपचाप खड़ा था। इस पर टोंग-टोंगी ने एकदम उसे धक्का मारा और डपटकर कहा, ''चल भाग यहाँ से। दफा हो जा। हमारे घर में तेरी कोई जगह नहीं।''

बेचारा इल-चुंग अपना-सा मुँह लेकर लौट पड़ा। वह इस आस से अपने भाइयों के पास गया था कि वे उसे गले लगाएँगे। पर दोनों भाइयों ने उसे दुत्कार कर निकाल दिया था।

इल-चुंग ने साल-सारी को पुकारा, ''साल-सारी।''

परंतु उत्तर न पाकर टोंग-टोंगी गुस्से से चिल्ला पड़ा, ''साल-सारी! कहाँ मर गया रे।'' तभी नीचे जमीन पर उसे धीमी घुरघुराहट-सी सुनाई पड़ी। टोंग-टोंगी ने देखा तो उसका आलसी भाई सोने की मोहरों में सर छिपाए ऊँघ रहा था। बस, टोंग-टोंगी ने गुस्से में भरकर उसे लात मारी। साल-सारी छटपटाकर उठ खड़ा हुआ।

टोंग-टोंगी ने कहा, ''अरे, घोंघा बसंत ! मेरी बात जरा ध्यान से सुन।''

साल-सारी जैसे घुरघुराकर बोला- ''बोल!''

टोंग-टोंगी ने आदेश भरे स्वर में कहा, ''थोड़ा नीचे झुककर मेरी बात सुन।''

टोंग-टोंगी मोटा और ठिंगना था। साल-सारी लंबा और दुबला-पतला। वह अकसर कहता था कि टोंग-टोंगी जो बात करता है, वह उसके पल्ले ही नहीं पड़ती, क्योंकि वह इतनी दूर से बोलता था। जब टोंग-टोंगी ने उससे झुककर सुनने को कहा तो साल-सारी जैसे हाथ बाँधे गुलाम की तरह झुक गया। पर ज्योंही वह झुका कि टोंग-टोंगी ने उसकी नाक पर चुटकी ली। इस पर भी साल-सारी ने चूँ तक नहीं की, क्योंकि टोंग-टोंगी अकसर ऐसा किया करता था। और साल-सारी भी इसका आदी हो गया था। अब असली बात यह थी कि टोंग-टोंगी और साल-सारी में से टोंग-टोंगी में ही थोड़ी-बहुत अक्ल थी। साल-सारी को दिमाग लगाने में बड़ी तकलीफ होती थी, इसलिए वह अपने दिमाग से कोई काम नहीं लेता था और हमेशा टोंग-टोंगी की हाँ-में-हाँ मिलाता था। पर टोंग-टोंगी अकसर उसकी नाक पर घूँसा जड़ देता था। इस सबके बावजूद, दोनों भाइयों में खूब पटती थी।

अब टोंग-टोंगी ने अपने मूर्ख भाई को आदेश दिया, ''जा, जंगल में कोई घायल चिड़िया पकड़कर ला।'' फिर धमकाते हुए बोला, ''और ध्यान से सुन। यदि तू खाली हाथ लौटा तो तेरी वह दुर्गति करूँगा कि...''

साल-सारी अपने भाई का आदेश पालन करने निकल पड़ा। पीछे टोंग-टोंगी बैठकर सोने की मुहरें गिनने लगा।

तलाश करते-करते साँझ घिर आई। पर साल-सारी को टूटे पंख वाली कोई चिड़िया नहीं मिली। यह सोच-सोचकर वह घबराया कि यदि खाली हाथ लौटता है तो भाई घूँसे मार-मारकर उसकी नाक तोड़ देगा। बस, इसी डर से उसकी आँखों से पानी बह निकला और नाक भी दर्द करने लगी। **-जारी**

तब इल-चुंग ने उन्हें जंगल में पड़ी एक घायल चिड़िया की सारी बात बताई। सारी बात सुनकर दोनों भाई ईर्ष्या से जल उठे। टोंग-टोंगी सिर खुजलाते हुए कुछ सोच रहा था। इल-चुंग चुपचाप खड़ा था।

**इस पर टोंग-टोंगी ने एकदम उसे धक्का मारा और डपटकर कहा, ''चल भाग यहाँ से। दफा हो जा। हमारे घर में तेरी कोई जगह नहीं।'' बेचारा इल-चुंग अपना-सा मुँह लेकर लौट पड़ा। वह इस आस से अपने भाइयों के पास गया था कि वे उसे गले लगाएँगे...**

• रोचक...

## अल नीनो क्या है?

*अल नीनो दरअसल एक मौसम संबंधी घटना है। इसकी वजह से पूर्वी और मध्य प्रशांत महासागरों में समुद्र का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। तापमान बढ़ने से मानसून में भी फर्क पड़ता है, जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून कमजोर पड़ जाता है और कम बारिश होती है। दरअसल अल नीनो के दौरान हवाएं पूर्व से पश्चिम की और बहती हैं। इस वजह से समुद्र का तापमान काफी ज्यादा बढ़ जाता है, जिसका वातावरण पर एक शृंखलाबद्ध प्रभाव पड़ता है। धरती का 70 फीसदी हिस्सा समुद्र से घिरा हुआ है। इसी वजह से ये जलवायु सिस्टम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रिसर्चर ने पहले अनुमान लगाया कया कि समुद्र का औसत तापमान बढ़ने से पेरू और इक्वाडोर के समुद्र तट ज्यादा गर्म हो गए। 1980 के दशक से पहले अधिकांश अल नीनो ने इसके संकेत दे दिए थे। जलवायु मॉडल ने संकेत दिया है कि ला नीना के तीन साल बाद इस साल अल नीनो के संकेत मिले हैं। ला नीना के प्रभाव से धरती ठंडी होती है। सात साल पहले अलनीनो के आने के बाद दुनिया भर के महासागरों में 0.04 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है।*

• काफल ...

*काफल का वैज्ञानिक नाम मिरिका एस्कुलेंटा है। ये पेड़ हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाता है। हजारों साल से उत्तराखंड के जंगलों में काफल का पेड़ उग रहा है। उत्तराखंड के पर्वतीय इलाकों में ये काफी ज्यादा मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा ये हिमाचल प्रदेश और नॉर्थ ईस्ट के पहाड़ी इलाकों में होता है। नेपाल के कई इलाकों में भी काफल का पेड़ पाया जाता है, जहां इसके नाम अलग-अलग है। इस जंगली फल में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसमें कैल्शियम, जिंक और फास्फोरस जैसे पदार्थ पाए जाते हैं, जो शरीर के लिए वरदान से कम नहीं है। काफल में विटामिन सी और एंटी ऑक्सीडेंट भी होता है।*